

## DISCUSSION AND ANALYSIS OF THEATRICAL WORKS OF DR. SAROJINI AGARWAL

Dr Vinita Rani

Asso Professor, Hindi Department, K. G. K. College, Muradabad, U.P.

### डॉ० सरोजिनी अग्रवाल की नाट्य कृतियों का विवेचन एवं विश्लेषण

डॉ विनीता रानी -एसो. प्रोफेसर

हिन्दी विभाग के.जी.के. महाविद्यालय

मुरादाबाद (उ.प्र.)

*Dr. Sarojini Agarwal is very rich in writing. On one hand she is a storyteller of women's suffering, on the other hand she is a sensitive poetess. And finally, you have made a strong attack on the social anomalies through your theatrical works, as well as have made a commendable effort to show a good path of action for everyone from the individual to the world. His plays were performed repeatedly from several local forums in Moradabad, aired from Delhi with Akashvani Rampur and also reached Doordarshan in the form of a serial and two telefilms.*

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल लेखनी की अत्यंत धनी हैं। एक ओर वे नारी-व्यथा की कथाकार हैं, दूसरी ओर संवेदनशील कवयित्री। और अन्ततः आपने अपनी नाट्यकृतियों द्वारा सामाजिक विसंगतियों पर सशक्त प्रहार भी किए हैं साथ ही, व्यक्ति से लेकर विश्व तक सबके लिए एक मंगलकारी कर्म-पथ दिग्दर्शित करने का भी सराहनीय प्रयत्न किया है। उनके नाटक मुरादाबाद के अनेक स्थानीय मंचों से बार-बार अभिनीत किए गए, आकाशवाणी रामपुर के साथ दिल्ली से भी प्रसारित हुए तथा एक धारावाहिक और दो टेलीफिल्मों के रूप में दूरदर्शन तक भी पहुंचे।

आपके चार नाटक-संग्रह, दो टेलीफिल्में और एक तरह प्रकरणों का दूरदर्शन पर प्रस्तुत धारावाहिक है। उनकी इस विधा की कृतियों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है•

रंगमंचीय एकांकी नाटक-'तुम मनुष्य हो तथा किस्से ज़िन्दगी के'

• रेडियोनाटक-नहीं झरेगी शेफाली तथा आँगन की नागफनी

- दो टेली फिल्म-मौन भंग, सत्य पथ
- एक धारावाहिक-अपने अपने सूर्यमुखी

उनके रेडियोनाटक संग्रह 'नहीं झरेगी शोफाली' को वर्ष 1918 की सर्वश्रेष्ठ नाट्यकृति के रूप में उ.प्र. हिन्दी साहित्य संस्थान लखनऊ द्वारा भारतेंदु हरिश्चन्द्र नामित पुरस्कार से 75000/- की धनराशि के साथ सम्मानित किया जा चुका है।

आपने श्री जयशंकर प्रसाद जी की चार कहानियों का नाट्य रूपांतर भी किया है जिनमें से पुरस्कार का प्रसारण दूरदर्शन पर हुआ। आपके हर नाटक का कथ्य आज के जीवन के किसी न किसी व्यावहारिक पक्ष से जुड़ा है और नाटक लेखिका की एक ही चेष्टा रही है कि वे हर नाटक में अपनी कथा दृष्टि को इस प्रकार प्रस्तुत कर पायें कि श्रोताओं और दर्शकों की अनुभूतियाँ भी सहज भाव से उससे जुड़ जायें। उनके नाट्य लेखन की एक और विशेषता है कि उन्होंने अपने नाट्य संग्रहों की भूमिकाओं में 'अपनी बात' बड़ा सहजता से कही है और जो कहा है उनके नाटक उसी का प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने बिना कुछ छिपाये अपनी छोटी सी कामना अपने सारे नाटक सृजन के संदर्भ में व्यक्त की है कि "स्वातिनक्षत्र की छोटी बड़ी बूदों की तरह मेरी नाटिकायें और नाटक यदि किसी शक्ति या श्रोता की संवेदना सीपी में एक क्षण को भी मोती बन पाये तो यह मेरी लेखनी का सौभाग्य होगा। अब उनकी नाट्य कृतियों की संक्षिप्त समीक्षा निम्नांकित है।

### तुम मनुष्य हो -

इस संकलन में छोटी बड़ी चौदह नाटिकायें हैं। बड़ी नाटिकाओं में 'संतो ताई' और 'मुझे आने दो न दादी माँ', हैं, शेष सभी दस पन्द्रह मिनट की लघु अवधि में समाप्त हो जाने वाली हैं। विषय की दृष्टि से इसमें दहेज और भ्रूणहत्या जैसी सामाजिक समस्याओं के साथ देश भक्ति, नारी नियति और कुछ त्रासद घटनाओं जैसे गुजरात के भूकंप आदि के करुण प्रसंग समाहित हैं।

यह नाट्य संग्रह रंगमंचीय नाटकों की दिशा में एक नए प्रयोग का सूत्रपात भी करता है। इसकी कुछ नाटिकाओं के संवाद मुक्त छंदात्मक हैं। लेखिका ने इसका कारण बताते हुए लिखा है-

"संकलन की प्रारम्भिक छः सात नाटिकाओं के संवाद काव्यात्मक हैं शायद इसलिए कि उनसे जुड़ी संवेदनाओं के तीव्र ज्वार को गद्यात्मक पंक्तियों में बाँध पाना संभव नहीं हुआ और उनकी अनुभूतियों ने अपने आप आगे बढ़कर अपनी अभिव्यक्ति के लिए मुक्त छंद को चुन लिया है।"

ऐसी नाटिकाओं में दो तीन पात्रों के मध्य संवाद शैली का प्रयोग किया गया है। 'तुम मनुष्य हो' में केवल दो पात्र हैं देवदूत और मनुष्य और उनके परस्पर वार्तालाप से सारी नाटिका रची गई है। इसी तरह एक बार फिर में सूत्रधार नटी के संवाद ही मुख्य हैं। कुछ नाटिकाओं जैसे 'मुझे आने दो न माँ और बोलो कर्ण बोलो' में संवादों की शैली गद्यात्मक और पद्यात्मक दोनों प्रकार की है। भ्रूण हत्या के लिए बाध्य की जाती माँ अपने भावोदगारों को इस प्रकार व्यक्त करती है

मैं माँ हूँ / मैं ही करूंगी खत्म / भ्रूण हत्या के इस /वीभत्स व्यापार को

मैं माँ हूँ,

मैं ही करूँगी अन्त

इरा नारी पक्षी पञ्चत्र का

इसी तरह महाभारत को विह्वलकर्ता अपने विवाह पूर्व जन्मे और त्यागे गए पुत्र कर्ण को अपनी विवश स्थिति बताती है और भरी आँखों और अवरुद्ध कंठ से

"मेरे जननी पद को पाप कहा था धर्म के महाधीशों ने/ अपनी निर्गम कटूक्तियों से/और रख दी थी मेरे आगे / सदाचार की नियमावली/सुनो कर्ण सुनो।

क्या सारी लक्ष्मण रेखायें होती हैं

माँ के लिए ही?

बोलो कर्ण बोलो,

इन गद्य-पद्यात्मक नाटिकाओं को अभिनीत भी एक नई शैली के प्रयोग से किया गया। पात्रों के संवाद नेपथ्य से बोले गए, मंच पर केवल मूक-अभिनय प्रस्तुत हुआ। यह प्रयोग बहुत ही प्रभावोत्पादक रहा।

संकलन की हर नाटिका में कोई न कोई संदेश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देने का प्रयत्न है। जैसे 'रोशनी के लिए' नाटिका से भ्रष्टाचार का मुखर विरोध करने वाले ईमानदार अफसर हरीश को स्मगलरों द्वारा गोली मार दी जाती है तो हरीश का छोटा सा बेटा अपने पापा के अंतिम क्षणों में उनके समीप बैठ कर रोते हुए भी संकल्प लेता है-

"आई प्रामिस यू डैडी, आई प्रामिस यू" मैं हर अंधेरे का विरोध करूँगा... मैं हमेशा लड़ूँगा आपकी तरह रोशनी के लिए-हाँ डैडी, प्लीज बिलीव मी।

इसी तहर संतो ताई "की ताई जो दहेज प्रथा की वजह से कभी भी माँ नहीं बन पाई। अपनी जोड़ी बटोरी संपत्ति गांव की एक गरीब लड़की के विवाह के लिए दे देती हैं और दुखद अतीत याद करती हुई कहती हैं -

हाँ उस दिन से मन में संकल्प जरूर कर लिया कि जहां का बन पड़ेगा अपनी शक्ति भर कोशिश करूँगी कि दान-दहेज को लेकर कोई लड़की मेरी तरह दुख न पाये बतासो ।

'भारती' नाटिका की भारती देश की रक्षा के लिए बलिदान का मार्ग बुनती हैं तो अनमोल बात के सेठ जी को अपने गुरु की कही बात याद आ जाती है कि इंसानियत से बड़ी कोई दौलत नहीं होती और हग होंगे कामयाब की लेडी डाक्टर घायल आतंकवादी की मरहम पट्टी करने के बाद उन्हें समझाती है -

"देखो, बेकसूरों की जान लेने वाली बंदूक की गोलियाँ किसी भी सवाल का 'सही जवाब नहीं दे सकती। तुम्हें तो जो विरारात मिली है वह भाई -चारे की अनमोल विरासत है। अपने इस उजले इतिहास में खुद ही ये खून के धब्बे मत लगाओ।

इस संग्रह के नाटकों की दो और विशेषतायें कही जा सकती हैं एक तो इनके अभिनय के लिए किसी भी तरह का विशेष रंगमंच नहीं चाहिए, दूसरे इनकी पात्र योजना अधिकतर मध्यवर्गीय है अतः उनकी वेश भूषा आदि के लिए भी कुछ अतिरिक्त विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

### किस्से जिन्दगी के -

इस संकलन में छोटी-छोटी पन्द्रह व्यंग्यपूर्ण नाटिकायें जैसा कि लेखिका ने स्वयं बताया है इसका शीर्षक और इस नाटयश्रृंखला को लिखने का अनुबंध दोनों उन्हें आकाशवाणी रामपुर से मिले। उसी के अनुसार मिर्जा व बेगम तथा अन्य कुछ सहायक पात्रों को आधार बनाकर कई नाटिकायें लिखी गईं।

लेखिका ने अपनी बात' में व्यंग्य शैली के विषय में लिखा है-

"मैं तो व्यंग्य को उस नुकीली सेफ्टीपिन की भाँति मानती हूँ जो किसी कपड़े पर कसी मजबूत वखिया के कुछ टॉकों को उधेड़ने की कोशिश इस उम्मीद पर करती है कि शायद कुछ गलत रूढिगत बंधनों और ज़िद्दी अनर्गल सोचों का कसाब थोड़ा ढीला पड़ सके।"

उन्होंने इन नाटिकाओं के कथ्य को भी स्पष्ट किया है --

"विषयवस्तु की दृष्टि से इनमें व्यक्ति से लेकर परिवार व समाज के साथ राजनीति और आधुनिक जीवन-शैली सभी को छुआ गया है और एक अप्रत्यक्ष प्रयास यह भी रहा है कि सामयिक विसंगतियों के प्रति पाठक या दर्शक को सहज भाव से कुछ सोचने के लिए प्रेरित किया जाय ।

'कुत्ते की दुम' में सरकारी योजनाओं और सरकारी कार्यशैली की पोल खोलते हुए कहा गया है"भइया, सरकारी कामकाज़ सारा कागजो पर चलता है-असलियत में कुछ नहीं होता" और "लगता है हवलदार तुमने यह कहावत नहीं सुनी कि हर सरकारी दफ्तर की मिट्टी भी पैसा मांगती है, सो ऐसा करो एक बोरी चीनी भिजवा दो तहसीलदार के पास, बस फिर बेडा पार समझो।

इसी तरह 'नई सदी के बाजार में आज के आदमी की सोच पर बड़ी तीखी चोट को गई है -

"बाबा, यह इक्कीसवीं सदी का बाजार है-यहाँ बातें मिलती हैं, भाषण मिलते हैं, सपने मिलते हैं, उपदेश मिलते हैं और भी बहुत कुछ मिलता है लेकिन सीधी-सादी सरल इंसानियत नहीं मिलती।"

लेखिका की दृष्टि आज की उच्चवर्गीय महिलाओं की उस दिखावटी जीवन शैली की असलियत को उजागर करती हैं जिसमें उनके पास शापिंग के लिए किटी पर्टिज के लिए और अपनी दोस्तों से फोन पर घंटों बातें करने का टाइम तो है पर अपने बच्चों की बात सुनने के लिए एक मिनट की फुरसत नहीं है। 'टाइम कहाँ है बच्ची कहती है -

"मम्मी, मैंने दोनों पोयम्स याद कर ली हैं। सुनाऊँ?

"नहीं डॉली, अभी नहीं, अभी तो मुझे एक बहुत जरूरी जगह जाना है। मेरे पास टाइम कहाँ है?"

इसी तरह आज देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और उसको मिटाने के लिए गाँधीवादी आदर्शों की बात भी बड़ी ही चतुराई से 'गांधी जी के तीन बंदर में कही गई है-

"बस-बस-बस, बड़े भैया अब बस करो, मँझले भैया ऐसे आँखें बंद कर लेने और कानों में उँगली डालने से कुछ नहीं होगा। राम राज्य लाने के लिए फिर से बापू के बचन ही दुहराने होंगे-मैं बुरा नहीं बोलूँगा, पर सच ज़रूर कहूँगा।"12

संकलन की शेष नाटिकाओं में व्यंग्य की अपेक्षा हास्य अधिक प्रधान है। छोटीछोटी मनोरंजक घटनाओं को लेकर उनका तानाबाना बुना गया है। 'मियाँ जी के पान, मुंशी जी की तसवीर, चूड़ी वाली गली, चाँदी की डिब्बी व वे नहीं आयेंगे आदि नाटिकायें इसी प्रकार की हैं।

इस संकलन की दो बड़ी विशेषतायें हैं एक तो पात्रानुकूल भाषा और दूसरी धारदार संवाद शैली जिसके कारण ही ये नाटिकायें प्रभावपूर्ण बन गई हैं।

### "नहीं झरेगी शेफाली" व "आँगन की नागफनी" -

इन दोनों संग्रहों में रेडियों के लिए लिखे गए बाइस नाटक हैं जिसमें अधिकांश आकाशवाणी रामपुर से प्रसारित हो चुके हैं। रेडियों नाटकों का शिल्प रंगमंच व दूरदर्शन दोनों के नाटकों से बिल्कुल ही भिन्न होता है। इनके पास अपने सारे तत्त्वों को प्रस्तुत करने का केवल माध्यम होता है-ध्वनि या आवाज। इसी से दृश्य परिवर्तन की सूचना दी जाती है और इसी से पात्र योजना को प्रस्तुत किया जाता है। इनके पास रंगमंच, वस्त्रभूषा या आंगिक, अभिनय जैसी कोई सुविधा नहीं होती केवल वाणी या कहे संवादों के द्वारा ही नाटककार को अपनी सारी सृजन यात्रा सफल बनानी पड़ती है। इस दृष्टि से दोनों संग्रहों के नाटक खरे सिद्ध हुये हैं।

लेखिका ने अपने दोनों नाटय संग्रहों के कथाविषयों के संदर्भ में स्वयं अपनी बात बहुत स्पष्टता से लिखा है -

"नहीं झरेगी शेफाली" में लगभग सभी नाटक नारी समस्याओं और नारी मन की प्रतिक्रियाओं से जुड़े हैं।"

'आँगन की नागफनी' के नाटक कथ्य की दृष्टि से एक ओर सामाजिक समस्याओं जैसे एड्स व पोलियों के साथ-साथ लड़कियों के प्रति भेद-भाव की प्रवृत्ति और बढ़ती हुई साम्प्रदायिक एवं आतंकवादी हिंसा से जुड़े हैं और दूसरी ओर इनमें बिखरते हुए परिवारिक मूल्यों, बढ़ती हुई पाश्चात्य मनोवृत्तियों एवं रूढ़ियों के कारण टूटती नारी मन की अभिलाषाओं को भी बड़ी आत्मीयता से छुआ गया है।

'वे दो बूंदें में पोलियोग्रस्त युवक अपने आसपास के सभी लोगों को पोलियों के लिए पिलाई जाने वाली दवाई की दो बूंदें अपने-अपने बच्चों को पिलाने के लिए अनुरोध करता हुआ कहता है-

"बुआ, वे दो बूंदें तो हर बच्चे के लिए सूरज की खुली धूप है, खुशबू से भरी ताजी हवा है.....वे दो बूंदें माँ का दूध है.....वे दो बूंदें हर बच्चे का आज हैं, उसका आने वाला कल हैं और सारे देश की उम्मीदें हैं और हर बच्चे के लिए सच्ची संजविनी है।

इसी प्रकार 'यमुदूत' में एडस के कारणों व परिणामों की सूचना देने के साथ ही साथ एडस के रोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार पर बल दिया गया है।

साम्प्रदायिक दंगों में अपनी बेटी और पत्नी के खोजने का दर्द आँखों में लिए महाशय जी अपने अंतिम क्षण में अवरुद्ध कंठ से केवल इतना ही कहते हैं -

"बस मेरी एक बात याद रखना पंडित जी यह मुल्क जितना तुम्हारा है उतना ही मौलाना का है और उतना ही सरदार का.....यह हम सबका है (रुककर) इसे आपस में बाँटने वाली किसी दीवार को मत उठने देना चाहे वह जात-पात की हो.....चाहे मज़हब की .....और चाहे किसी सियासत की..... सिर्फ आपसी भाईचारे से ही हम सब अपनी आज़ादी को महफूज रख सकते हैं।"

सरोजिनी जी ने अपने रेडियो नाटकों में नारी की अन्तर्वेदना को कई कोणों से महसूस किया और उन पर अपनी संवेदना का मरहम लगाया है। सुमिता अपने पाँचवे नम्बर की लड़की होने की गहरी पीड़ा को व्यथित स्वर में व्यक्त करती है -

"विकास, मैं पाँचवें नम्बर की हूँ जिसका जन्म भी अनचाहा था और जीवन भी, बाबू जी ने कहा था पैदा होते ही क्यों न मर गई यह, मेरे गले में फॉसी की रस्सी की तरह आकर क्यों पड़ गई अभागी। ले जाओ इसे मेरे सामने से।"

अपने उद्योगपति जीवन सहचर को पागलों की तरह पैसे के पीछे भागते हुए देखकर उनकी नायिका उनके भविष्य के प्रति भयभीत और चिन्तित है -

"प्रशान्त! तुम आज नहीं महसूस कर रहे हो कि तुम किस तरह धीरे-धीरे अपना सब कुछ खोते जा रहे हो? रेगिस्तान की मीलों लम्बी फैली रेत में पानी का भ्रम तो मिल सकता है पर प्यास कभी नहीं बुझती और पैसे की प्यास भी ऐसी ही है..... मुझे तुम्हारे लिए भय लगता है कि कहीं एक दिन तुम अपनी बनाई सोने-चाँदी की इस मीनारों के बीच बिल्कुल अकेले ही न रह जाओ।

नारी की वेदना के साथ उसके विद्रोह के स्वर भी नाटकों में व्यक्त हुए हैं -

"मैं क्या कोई नुमाइश की चीज़ हूँ कि झाड़ पोंछ कर जिसके सामने चाहा रख दिया। देखने वाले का मन हुआ तो हाँ कर दी और नहीं तो ठोकर मार कर चल दिया, आखिर मेरी भी कोई पहचान है कि नहीं?"

सरोजिनी जी के नाटकों की कई नायिकायें अपनी अस्मिता से समझौता न करके स्वतंत्र जीवन का निर्णय लेती हैं। पति और सास के भ्रूण हत्या करवाने की बात से शकुन सहमत नहीं होती और अपना पक्ष पूरे आत्मविश्वास के साथ रखती हैं

"आप सबसे भी और सारे समाज से भी मेरा तो सिर्फ एक सवाल है कि किस अपराध के लिए हम अकाल मृत्यु का दंड दे रहे हैं अपनी आने वाली दीपशिखाओं को? क्यों?.....नहीं.....यह मुझसे बिल्कुल नहीं होगा। मुझे यहाँ से जाना ही पड़ेगा .....मेरा दम घुटने लगा है यहाँ ।

लेखिका ने नारी को बेटी, पत्नी, माँ यहाँ तक कि स्वतंत्र रूप से जीवन यापन करने वाली लड़कियों आदि सभी के अन्तर्द्वन्द्व को अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

वस्तुतः रेडियो नाटको की प्रसारण अवधि प्रायः पन्द्रह, तीस और पैंतालिस मिनट निश्चित होती है। इस कालावधि के अन्दर केवल विविध ध्वनियों और संवादों के द्वारा अपनी कथावस्तु का सम्यक निर्वाह करना और उन्हें रेखांकित कर पाना अपने आपमें एक बड़ी चुनौती है पर आपके सभी नाटक इस कसौटी पर पूरी तरह खरे उतरे हैं।

### सत्य पथ -

"सत्य पथ" वस्तुतः दूरदर्शन के लिए लिख गये नाट्यरूपान्तरों और टेलीफिल्मों का संग्रह है। "मौन भंग" और "सत्य पथ" ये दोनों टेलीफिल्में गुरु प्रोडक्शन के द्वारा निर्मित की गईं और डी0डी0 वन, दिल्ली दूरदर्शन से ही प्रसारित हुईं। गुरु फिल्मस के अनुरोध पर ही श्री जयशंकर प्रसाद की चार कहानियों, 'पुरस्कार', 'नीरा', 'दुखिया' और विरामचिन्ह का नाट्य रूपान्तर किया गया। इसमें से केवल पुरस्कार का प्रसारण हुआ। अध्यात्मदर्पण, आदमी कहाँ गया और सखि वंसत आया ये तीनों रचनायें पहले मंच के लिए लिखी गईं बाद में इन्हें दूरदर्शन के प्रसारण के अनुरूप बनाया गया।

इस प्रकार इस संकलन में कुल नौ नाटक नाटिकायें हैं। लेखिका ने लिखा है-

"टेलीफिल्म और प्रसाद जी की कहानियों के रूपांतर का कथानक नारी का अंतःसंघर्ष है. ....और सत्यपथ में पुरुष मन के अन्तर्द्वन्द्व को उभारने की चेष्टा की गई है।"

इस पुरुष प्रधान समाज में नारी मन की चिंता कभी नहीं की गई। इसी वास्तविकता को मौन भंग में रेखांकित करते हुए अंत में उसकी आत्मविश्वास भरी छवि को अंकित किया गया है। गृहसेविका मंगला नायिका मिताली से कहती हैं -

"मन नहीं है कहने से तो काम नहीं चलेगा न मालकिन, जब औरत का जन्म मिला है तो सारी उमिर बिना मन के भी बितानी पड़ सकती है।"

"मैं नहीं जाऊँगी तो बेटे-बहू को आशीर्वाद कौन देगा? "आप चाहे जो कुछ कहते रहिए मैं जरूर जाऊँगी ।"

इसी तरह 'सत्य पथ' के नायक प्रा. कुमार पत्नी और बच्चों से बार-बार अपने को उपेक्षित पाकर अन्ततः अपनी डायरी में लिखते हैं -



'आत्मविश्लेषण करता हूँ तो अपना कोई दोष समझ में नहीं आता है। शायद साधारण सामाजिक प्रतिक्रियाओं से मेरी प्रतिक्रिया हमेशा अलग रहती है इसलिए आज मैं घर-बाहर सब जगह अकेला कर दिया गया हूँ।"24

दूरदर्शन को एक प्रकार से अत्यंत विकसित रंगमंच कहा जा सकता है जहाँ हर प्रकार की घटनाओं को प्रस्तुत किया जा सकता है लेखिका इस वास्तविकता से परिचित है अतः उन्होंने अपने कथानकों में ताने-वाने विस्तृत धरातल पर बुने हैं।

### अपने-अपने सूर्यमुखी -

यह तेरह प्रकरणों का एक धारावाहिक है जो सन् 6 जून 1995 से लगातार मंगलवार रात्रि 8.30 पर डी.डी. वन से प्रसारित किया गया और काफी लोकप्रिय हुआ। इसमें 'सूर्यमुखी' व्यक्ति की जीवन-दृष्टि का प्रतीक है-लेखिका मानती है कि जो जीवन दृष्टि मानवीय संवेदना के सूर्य से जुड़ी होती है वही अपने परिवेश को सुवासित कर पाती है-अन्य दृष्टियाँ प्रायः दिग्भ्रमित हो जीवन को त्रासद ही बनाती हैं।

धारावाहिक की नायिका शुभा मेरे स्वयं के जीवन मूल्यों की ही प्रतिकृति है सरोजिनी जी ने इसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया है। यह एक माँ के एक छोटे से सपने की कहानी है जिसके लिए वह जीवन भर प्रार्थना करती रही है कि उसकी जीवन संध्या उनके तीन पुत्रों के परिवार के साथ बीते पर अन्ततः ऐसा होता नहीं। इसीलिए अंत में अपने तीनों पुत्रों के माथे पर बिदा के रोली चावल लगाते हुए शुभा ने कहा-

"तुम सबने अपने अलग-अलग गंतव्य निश्चित कर लिए, अच्छा किया... पर सुनों हर जन्मदायिनी वसुंधरा का एक ही सूर्यमुखी होता है 'ऑचल भर ममता'। तुम सबके चले जाने के बाद हम अपने घेरे तोड़कर इस आँगन को औरों के लिए खोले देंगे।" (लेखकीय दृष्टिकोण से) और इस प्रकार 'यशोधरा-बाल वाटिका बनी।

नायिका शुभा ने पूरे धारावाहिक में अपनी डायरी के पन्नों पर जो कुछ भी लिखा या कहा वह सब सरोजिनी जी की सुदृढ़ आस्थाएँ और मूल्य चेतनाएँ हैं।

"हर राबंध में अपनी एक सुगंध होती है और सुगंधों की इस परिधि में ही जीवन का रवर्ग है .....संबंध हानि-लाभ के सवाल नहीं होते हैं।" "आज तो सर्वगुण कांचनमाश्रित हैं। पैसा है तो सब कुछ है वरना कोई पहचानता भी नहीं। कहीं कुछ भी हो पर मैं अपनी यशोधरा के कोने-कोने में आत्मीयता की आत्मगंधा लगाना चाहती हूँ। "संवेदना सृष्टि का सूर्य है / सूर्य से जुड़ी जीवन-दृष्टियाँ ही/ फूल हैं सूर्यमुखी के/ सबके अपने-अपने सूर्यमुखी होते हैं .....मैं सूर्य को डूबने नहीं दूंगी क्योंकि आलोक से जुड़े फूल ही/ इतिहास लिखते हैं। मैं सूर्य को डूबने नहीं दूंगी। मैं सूर्य को डूबने नहीं दूंगी।"

अन्ततः सरोजिनी जी की नाट्यकृतियों के संदर्भ में उनकी एक और विशेषता भी स्वयंसिद्ध है। वे सभी नाट्यतत्त्वों के आधार पर सशक्त हैं विशेषतया संवाद -योजना और पात्र-योजना में। उनका हर पात्र किसी न किसी जीवन मूल्य का प्रतीक है और सामूहिक रूप से भारतीय सांस्कृतिक अवधारणाओं के प्रबल पक्षधर हैं।



अस्तु! नाटय सृजन की दिशा में उन्होंने अपने आपको रेखांकित किया है-इसमें कोई संदेह नहीं है।

### संदर्भ

1. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, तुम मनुष्य हो (अपनी बात) से साभार
2. उपरिवत्, एक बार फिर, पृ. 110
3. उपरिवत्, तुम मनुष्य हो, पृ. 121
4. उपरिवत्, रोशनी के लिए, पृ. 136
5. उपरिवत्, संतो ताई, पृ. 178
6. उपरिवत्, हम होंगे कामयाव, पृ. 122
7. उपरिवत्, 'किस्से जिन्दगी के' (अपनी बात) से साभार
8. उपरिवत् (अपनी बात) से साभार
9. उपरिवत् 'कुत्ते की दुम', पृ. 21
10. उपरिवत्, नई सदी के बाजार, पृ. 38
11. उपरिवत्, टाईम कहाँ है, पृ. 55
12. उपरिवत्, गांधी जी के तीन बंदर, पृ. 34
13. उपरिवत्, नहीं झरेगी शेफाली (अपनी बात) से साभार
14. उपरिवत्, आँगन की नागफनी, पृ. 68
15. उपरिवत्, वे दो बूंदें, पृ. 65
16. उपरिवत्, आँगन की नागफनी (यमदूत), पृ. 26
17. उपरिवत्, नहीं झरेगी शेफाली, पृ. 80
18. उपरिवत्, नहीं झरेगी शैफाली, पृ. 87
19. उपरिवत्, पृ. 153
20. उपरिवत्, आँगन की नागफनी, पृ. 182
21. उपरिवत्, सत्यपथ (अपनी बात) से साभार
22. उपरिवत्, सत्यपथ, पृ. 15

23. उपरिवत्, सत्यपथ, पृ. 48
24. उपरिवत्, सत्यपथ, पृ. 93-94
25. उपरिवत्, अपने-अपने सूर्यमुखी, पृ. 26
26. उपरिवत्, पृ. 75
27. उपरिवत्, पृ. 231

## **REFERENCES**

1. Dr. Sarojini Agarwal, Tum Manushya Ho (your point) Credits
2. Ibid, Ek Baar Fir, p. 110
3. Ibid, Tum Manushya Ho, p. 121
4. Ibid, Roshni Ke Liye, p. 136
5. Ibid, Santo Tai, p. 178
6. Ibid, Hum Honge Kamyab, p. 122
7. Ibid, courtesy of 'Kisse Zindagi Ke' (Apne Baat)
8. Ibid
9. Ibid 'Kutte ki Dum', p. 21
10. Ibid, Nayi Sadi Ke Bazaar, p. 38
11. Ibid, Time Kahan Hai, p. 55
12. Ibid, Gandhi ji ke Teen Bandar, p. 34
13. Ibid, Nahi Jheregi Shefali (Apne Bata)
14. Ibid, Aangan ki Nagfani, p. 68
15. Ibid, We Do Boondein, p. 65
16. Ibid, Aangan ki Nagfani (Yamdoot), p. 26
17. Ibid, Nahi Jheregi Shefali, p. 80
18. Ibid, Nahi Jheregi Shefali, p. 87

19. Ibid, p. 153
20. Ibid, Aangan ki Nagfani, p. 182
21. Ibid, Satyapath (own talk)
22. Ibid, Satyapath, p. 15
23. Ibid, Satyapath, p. 48
24. Ibid, Satyapath, p. 93-94
25. Ibid, Apne Apne Sooryamukhi, p. 26
26. Ibid, p. 75
27. Ibid, p. 231